ठुमक चलत रामचन्द्र

तुलसीदास जी द्वारा रचित भजन

ध्रुवपद

छोटे-से भगवान श्रीरामचन्द्र ठुमक-ठुमककर,
डगमगाते हुए बड़े मनोहारी रूप में चल रहे हैं
और हर पग के साथ उनकी पायलें मधुर स्वर में बज रही हैं।

अन्तरा १

किलकारियाँ मारकर हँसते हुए भगवान राम
बड़े हर्षित होकर दौड़ने का प्रयास करते हैं
और फिर लड़खड़ाकर भूमि पर गिर पड़ते हैं।
दशरथ की रानियाँ, उनकी माताएँ उनकी ओर दौड़ पड़ती हैं
और बड़े लाड़-दुलार से उन्हें गोद में उठा लेती हैं।

अन्तरा २

अपने आँचल से माताएँ श्रीराम के अंगों पर लगी धूल झाड़ती हैं।
तन, मन, धन उन पर न्योछावर करते हुए, वे विविध भाँति से उन्हें दुलराती हैं,
मृदुल वचन कहते हुए, वे उन्हें हृदय से लगा लेती हैं
और अपने लाड़ले बालक राम को प्यार से गले लगा लेती हैं।

अन्तरा ३

छोटे-से श्रीराम के होंठ मूँगे जैसे लाल-लाल हैं; उनकी बोली अति मधुर है।
उनकी सुभग व सुन्दर नासिका में छोटा-सा आभूषण सुशोभित है।

अन्तरा ४

बालक राम के सुन्दर मुखकमल के दर्शन कर रानियाँ
अति आनन्दित हो रही हैं।
तुलसीदास जी कहते हैं कि भगवान के मुखमण्डल का सौन्दर्य
अतुलनीय है। रघुवर [रघुवंश के शिरोमणि] प्रभु श्रीराम की तुलना
तो बस स्वयं प्रभु श्रीराम से ही की जा सकती है।

अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।